विश्व मानवता के पोषक कुछ वैदिक ऋचाओं के रूपान्तर

यजुर्वेद के अध्याय 9 के मंत्र 22 से 25 तथा अथर्ववेद के काण्ड 12 के अध्याय एक में पृथ्वी की मातृभूमि के रूप में अद्‌भुद प्रार्थना है । ऐसा लगता है कि वैदिक ऋषियों के लिए संपूर्ण पृथ्वी ही न केवल उनका राष्ट्र थी बल्कि उनकी अपने कुटुम्ब का प्रतिरूप थी । **पृथ्वी सूक्त** में इस दर्शन को विश्व मानवता के एक संदेश के रूप में ग्रहण किया जा सकता है –

विविध धरमी
विविध–भाषा
विविध–भूतल, मानवों का
एक तुम ही घर अटल,
हो गाय कपिला
सरल सीधी
हमारे हित, सहसधारा, दुग्ध, धन की
बनो पृथिवी !

मंडल 10 के 191वें **संज्ञान सूक्त** में समन्वय, सामंजस्य और समरसता का अनूठा आदर्श प्रस्तुत किया गया है –

साथ मिलकार चलें
हम सब एक स्वर बोलें
मिलें मन सभी के
हो ज्ञान पूरित
पूर्व में जैसे कि मिलकर देवता
सब भाग अपना गृहण कर
परिपूर्णता को प्राप्त करते थे

मंत्र सबका एक हो
हो प्राप्ति भी समरूप
चित्त, मन सब एक जैसे हों
एक ही वह मंत्र देता हूं
होम जिससे यज्ञ में कर्तव्य है सबका

तुम्हारा हो वही संकल्प
हों उर तुम्हारे एक
तुम्हारे मन परस्पर मिलें
संगठन जिससे सफल, शोभित
हो पूर्ण मानव का ।'

मित्र दो पक्षी सुपर्णा
एक तरु शाखा
निकट बैठे परस्पर प्रीति से
चख रहा फल स्वाद पूर्वक एक
उनमें देखता पर दूसरा केवल
बिना खाए 20

पूछता हूं आप से मैं छोर धरती का
बताओ है कहां ?
पूछता हूं मैं बताओ विश्व का
क्या केन्द्र है ?
ओज क्या है अश्व अति वलवान का ?
वाक् का उद्गम बताओ कहां है ? 34

वेदिका यह छोर है अन्तिम धरा का
यज्ञ यह है केन्द्र इस संसार का
सोम ही है ओज
हय बलवान का
ब्रह्म ही है मूल अतिशय वाक् का 35

व्योम सा विस्तृत
ऋचा के अक्षरों सा अमृत
जिसमें देवता संसार के सब वास करते
जानता उसको नहीं जो
ऋचा क्या उसका करेगी ?
जानते हैं जो उसे
वे परम पद के सदा अधिकारी 39

इन्द्र वह, वह मित्र है
उस को वरुण
पावक कहा जाता
दिव्य पंखों युक्त है वह गरुड़
सत्य है ही एक
पर विद्वान्
बहुधा उसे कहते
यम, अग्नि एवं मातरिश्वा हैं 46

(ऋग्वेद मंडल 1 के 164वें **सृष्टि सूक्त** की कुछ ऋचाओं का हिन्दी काव्यान्तर)